अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : छठी– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2025)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) 10 कोटाकोटि सागरोपम का स्थिति-बंध होने पर कितने वर्ष का अबाधाकाल होगा-
(क) 100 (ख) 1000
(ग) 10000 (घ) 1 लाख (ख)

(ii) संज्ञी पंचेन्द्रिय संज्वलन मान की कितनी जघन्य स्थिति का बंध करता है-
(क) 2 महिने (ख) 1 महिने
(ग) 15 दिन (घ) अन्तर्मुहूर्त (ख)

(iii) मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का उत्कृष्ट स्थितिबंध बेइन्द्रिय कितना करता है-
(क) 1 सागर (ख) 25 सागर
(ग) 50 सागर (घ) 100 सागर (ख)

(iv) सम्मूर्च्छिम मनुष्य में कितने उपयोग मिलते हैं-
(क) 12 (ख) 9
(ग) 4 (घ) 6 (ग)

(v) मनुष्यिनी में कितने योग मिलते हैं-
(क) 15 (ख) 11
(ग) 13 (घ) 14 (ग)

(vi) भवसिद्धिया जीव में कितनी लेश्याएँ मिलती हैं-
(क) 3 (ख) 4
(ग) 6 (घ) 1 (ग)

(vii) नवीन श्रावक का उत्कृष्ट विरह कितनी अहोरात्रि का है-
(क) 1 (ख) 7
(ग) 15 (घ) 12 (घ)

(viii) बलदेव का जघन्य विरह कितने वर्ष का है-
(क) 63000 (ख) 84000
(ग) 1 लाख (घ) 252000 (घ)

(ix) निम्न में से किसका उत्कृष्ट विरह अन्तर्मुहूर्त है-
(क) प्रथम नरक (ख) सन्नी मनुष्य
(ग) पृथ्वीकाय (घ) बेइन्द्रिय (घ)

(x) किस दिशा में पृथ्वीकाय के जीव सबसे थोड़े हैं-
(क) दक्षिण (ख) उत्तर
(ग) पश्चिम (घ) पूर्व (क)

(xi) दिशाणुवाइ का थोकड़ा पन्नवणा सूत्र के किस पद में है-
(क) तीसरे (ख) चौथे
(ग) पाँचवें (घ) छठे (क)

(xii) भाव दिशा के कितने भेद हैं-
(क) 18 (ख) 10
(ग) 04 (घ) 06 (क)

(xiii) शिल्प स्थावर का गोत्र है-
(क) पृथ्वीकाय (ख) अप्काय
(ग) तेऊकाय (घ) वायुकाय (ग)

(xiv) वनस्पतिकाय की कुल कितनी लाख योनियाँ हैं-
(क) 4 (ख) 24
(ग) 7 (घ) 14 (ख)

(xv) अप्काय से वायुकाय के जीव कितने अधिक हैं-
(क) विशेषाधिक (ख) संख्यात गुणा
(ग) असंख्यात गुणा (घ) अनन्तगुणा (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(i) जंगमकाय का वर्ण काला होता है। (नहीं)

(ii) पानी के बुलबुले के समान पृथ्वीकाय का संस्थान है। (नहीं)

(iii) कठोर स्वभाव वाले जीवों की 12 लाख कुलकोड़ी नहीं है। (नहीं)

(iv) गौतम द्वीप लवण समुद्र में है। (हाँ)

(v) विमला ऊँची दिशा है। (हाँ)

(vi) मानस सरोवर संख्यात कोटाकोटि योजन लम्बा चौड़ा है। (हाँ)

(vii) अन्तर्मुहूर्त के बाद तो कोई न कोई जीव एक गति से दूसरी गति में उत्पन्न होता ही है। (नहीं)

(viii) सर्वार्थसिद्ध देव के समान सिद्धों का उद्वर्तन होता है। (नहीं)

(ix) 6 मास के बाद तो अवश्य ही कोई न कोई कर्मभूमिज असन्नी मनुष्य सिद्ध होता है। (नहीं)

(x) अव्रती से सकषायी जीव विशेषाधिक हैं। (हाँ)

(xi) अभव्य जीवों से प्रतिपतित सम्यग्दृष्टि जीव अनन्त गुणा हैं। (हाँ)

(xii) स्थावरों में सबसे कम बादर तेऊकाय के पर्याप्त जीव हैं। (हाँ)

(xiii) प्रथम गुणस्थान में सन्नी जीव कम से कम एक कोटाकोटि सागर की स्थिति का बंध करता है। (नहीं)

(xiv) तिर्यंच आयु की उत्कृष्ट स्थिति संक्लिष्ट-परिणामों में बंधती है। (नहीं)

(xv) युगलिक में आयुकर्म का बंध वर्तमान भव की 1/3 भाग आयु शेष रहने पर होता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(i)	दर्शन मोहनीय	(क) चारित्र मोहनीय	कांक्षा मोहनीय
(ii)	खेचर स्त्री में गुणस्थान	(ख) छह	पाँच
(iii)	दसवाँ देवलोक का विरह	(ग) संख्यात लाख वर्ष	संख्यात माह
(iv)	सम्मूर्च्छिम मनुष्य में लेश्या	(घ) चार	तीन
(v)	70 कोटाकोटि सागरोपम	(च) कांक्षा मोहनीय	मिथ्यात्व मोहनीय
(vi)	9वाँ ग्रैवेयक का विरह	(छ) संख्यात माह	संख्यात लाख वर्ष
(vii)	अनुत्तर विमान में उपयोग	(ज) संख्यात वर्ष	छह
(viii)	बारहवाँ देवलोक का विरह	(झ) पाँच	संख्यात वर्ष
(ix)	40 कोटाकोटि सागरोपम	(य) तीन	चारित्र मोहनीय
(x)	बादर वायुकाय पर्याप्त में योग	(र) मिथ्यात्व मोहनीय	चार

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1=(15)**

(i)	मैं आयुकर्म का बंध किये बिना ही मरण को प्राप्त हो जाता हूँ।	चरम शरीरी जीव
(ii)	मैं ऐसी आनुपूर्वी हूँ जिसका उत्कृष्ट अबाधाकाल 1500 वर्ष है।	मनुष्य आनुपूर्वी
(iii)	मैं ऐसा वेद हूँ जिसका उत्कृष्ट स्थितिबंध 10 कोटाकोटि सागरोपम है।	पुरुष वेद
(iv)	मुझे 98 बोल का बासठियाँ भी कहते हैं।	महादण्डक
(v)	98 बोल में तिर्यंच जीवों के तुरन्त बाद मेरा नम्बर है।	मिथ्यादृष्टि जीव
(vi)	मेरा विरह चौदहवें गुणस्थान में विरह की अपेक्षा है।	संसारी जीव
(vii)	मैं सभी जीवों में सबसे कम हूँ।	गर्भज मनुष्य

(viii) मेरा विरह 64 इन्द्रों के समान है। सिद्ध भगवान

(ix) मेरा उत्कृष्ट विरह तीसरी नरक के उत्कृष्ट विरह के तुल्य है। नवीन साधु

(x) मेरा उत्कृष्ट विरह 45 अहोरात्रि है। छठा देवलोक

(xi) मुझमें उद्वर्तन के स्थान पर च्यवन कहना चाहिए। वैमानिक देव

(xii) मुझमें छह काय का थोकड़ा चलता है। प्रज्ञापना सूत्र

(xiii) मेरा स्वभाव शीतलता है। ब्रह्म स्थावर

(xiv) मेरी कुलकोड़ी सबसे कम है। तेऊकाय/शिल्प स्थावर

(xv) मेरी उत्कृष्ट स्थिति 49 अहोरात्रि है। तेइन्द्रिय

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) एकेन्द्रिय असाता वेदनीय की कितनी जघन्य स्थिति बान्धता है ?
1 सागर का 3/7 भाग में पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम

(ii) असंज्ञी पंचेन्द्रिय स्त्रीवेद की कितनी उत्कृष्ट स्थिति बांधता है ?
1000 सागर के 3/14 भाग की

(iii) संज्ञी पंचेन्द्रिय मनुष्य आयु की कितनी उत्कृष्ट स्थिति बांधता है ?
एक करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक तीन पल्योपम की ।

(iv) संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच गति की कितनी जघन्य स्थिति बांधता है ?
अन्तः कोटाकोटी सागरोपम

(v) बेइन्द्रिय काले वर्ण की कितनी जघन्य स्थिति बांधता है ?
25 सागर के 8/28 भाग में पल्योपम का असंख्यात भाग कम

(vi) पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त में गुणस्थान, योग, उपयोग एवं लेश्या संख्यात्मक रूप में लिखिए।
गुणस्थान-3, योग-5, उपयोग-9 एवं लेश्या-6

(vii) तीर्थंकर का जघन्य एवं उत्कृष्ट विरह लिखिए।
जघन्य 84000 वर्ष एवं उत्कृष्ट- देशोन 18 कोडाकोडी सागरोपम

(viii) कोई आठ द्रव्य दिशाओं के नाम लिखिए।
नोटः इनमें से कोई आठ मान्य- 1. पूर्व, 2. पश्चिम, 3. उत्तर, 4. दक्षिण, 5. ईशानकोण, 6. नैर्ऋत्य कोण, 7. आग्नेय कोण, 8. वायव्य कोण, 9-16 आठ दिशाओं के आठ अन्तर, 17. विमला (ऊँची दिशा) और 18 तमा (नीची दिशा)

(ix) मनुष्य सबसे थोड़े किस दिशा में हैं ?
दक्षिण और उत्तर दिशा में

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) अबाधाकाल किसे कहते हैं ?
कर्म बंधने के बाद अमुक समय तक किसी भी प्रकार के फल न देने की अवस्था को अबाधाकाल कहते हैं।

(ii) कौनसी 17 प्रकृतियों का दसवें गुणस्थान के चरम समय में जघन्य स्थिति बंध होता है ?
5 ज्ञानावरणीय, 4 दर्शनावरणीय, 5 अन्तराय, साता वेदनीय (साम्परायिक), उच्च गोत्र, यशकीर्ति, इन 17 प्रकृतियों का।

(iii) सोपक्रमी आयुष्य वाले मनुष्य-तिर्यंच में आगामी भव का आयु बंध कब होता है ?

मनुष्य-तिर्यंच में सोपक्रमी आयुष्य वालों में अपनी आयु का तीसरा भाग शेष रहने पर अथवा नवाँ भाग, अथवा सत्ताईसवाँ भाग, अथवा इक्यासीवां भाग अथवा 243 वाँ भाग अथवा 729 वाँ भाग शेष रहने पर अथवा अन्तर्मुहूर्त्त आयु शेष रहने पर आयु बंधता है।

(iv) संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव के छहों संहनन का उत्कृष्ट अबाधाकाल लिखिए।

1000, 1200, 1400, 1600, 1800 और 2000 वर्ष।

(v) चतुरिन्द्रिय जीव के दुरभिगन्ध, सूक्ष्म त्रिक एवं उच्च गोत्र का उत्कृष्ट स्थिति बंध लिखिए।

दुरभिगन्ध- 100 सागर का 2/7 भाग

सूक्ष्मत्रिक- 100 सागर का 9/35 भाग

उच्च गोत्र- 100 सागर का 1/7 भाग

(vi) किन परिणामों में आयु का बंध होता है और किन में नहीं ?

परिवर्तमान मध्यम परिणाम (घोलमान परिणाम) में आयु बंध होता है। अति जघन्य एवं अति विशुद्ध परिणामों में नहीं होता है।

(vii) प्रथम छह नरक की परस्पर अल्पबहुत्व लिखिए।

1. छठी नरक के नेरइए असंख्यात गुणा।
2. पाँचवीं नरक के नेरइए असंख्यात गुणा।
3. चौथी नरक के नेरइए असंख्यात गुणा।
4. तीसरी नरक के नेरइए असंख्यात गुणा।
5. दूसरी नरक के नेरइए असंख्यात गुणा।
6. पहली नरक के नेरइए असंख्यात गुणा।

(viii) 98 बोल में बोल क्रमांक 53 से 58 की परस्पर अल्पबहुत्व लिखिए।

53. प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय के पर्याप्त असंख्यात गुणा
54. बादर निगोद के पर्याप्त अस. गुणा
55. बादर पृथ्वीकाय के पर्याप्त अस. गुणा
56. बादर अप्काय के पर्याप्त अस. गुणा
57. बादर वायुकाय के पर्याप्त अस. गुणा
58. बादर तेउकाय के अपर्याप्त अस. गुणा

(ix) बेइन्द्रिय में, बादर के पर्याप्त में एवं पंचेन्द्रिय के पर्याप्त में योग एवं उपयोग लिखिए।

	योग	उपयोग
बेइन्द्रिय	4	5
बादर के पर्याप्त	15	12
पंचेन्द्रिय के पर्याप्त	15	12